लोकविद्या जन आन्दोलन की महिला संगठनों से अपील

-चित्रा सहस्रबुद्धे
राष्ट्रीय संयोजक, लोकविद्या जन आन्दोलन

इस रविवार 3 मार्च 2024 को वाराणसी में होने जा रहे 'महिला अधिकार सम्मलेन' के अवसर पर लोकविद्या जन आन्दोलन कुछ कहना चाहता है. सम्मलेन के लिए हमारी शुभ कामनाएं.

राजनीतिक, अकादमिक, स्वयंसेवी या सरकारी, सभी महिला संगठनों से हमारी अपील है कि वे सामान्य महिलाओं के ज्ञान, उनकी स्वयंस्फूर्त शक्ति और पहल को स्त्री-समाज की सक्रियता का आधार बनाने में आगे आयें.

चुनौती

मनुष्य-समाज में गैर-बराबरी और प्रकृति का बड़े पैमाने पर विध्वंस, दोनों मिलकर, आज की दुनिया के सामने निरंतर एक के बाद एक सबसे बड़े और दर्दनाक दृश्यों को खड़े करते जा रहे हैं. ऐसा करने में लगी नीतियों, साधनों, तकनीकों और व्यवस्थाओं को 'विकास' का नाम देना संवेदनहीन होने के ही सबूत हैं. संवेदनशील होने की ज़रूरत है. लेकिन पूंजीवादी विचार और व्यवस्थायें संवेदनाओं को ज्ञान का अंग मानने से शुरू से ही इनकार करती रही हैं.

पिछली सदी के अंत में पश्चिमी देशों में उठे महिला विमर्श की एक सशक्त धारा ने इस बात को उठाया कि चूँकि पूंजीवादी व्यवस्थाओं (आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक आदि) का ज्ञान-आधार आधुनिक साइंस में रहा है इसलिए ये आक्रामक, अमानवीय, असामाजिक, ऊँच-नीच वाली और शोषणकारी व्यवस्थाओं को जन्म देती है क्योंकि साइंस में सिद्धान्ततः भाव-जगत की दखल अमान्य है. गरीब देशों की स्त्रियों की बदतर होती जा रही स्थिति का एक बड़ा कारण इसमें देखा गया है.

इस परिस्थिति में स्त्रियों की ज़िन्दगी की बेहतरी (न्याय, सम्मान, खुशहाली हासिल करने) के लिए आधुनिक साइंस को और पूँजी व राजनीति के साथ इसके मजबूत गठबंधन को चुनौती देने का रास्ता बनाना है. और इसके लिए सामान्य स्त्रियों की शक्ति की पहचान करना आवश्यक है. सामान्य स्त्रियाँ यानि किसानी, कारीगरी और छोटी पूँजी के सेवा और व्यवसाय के उद्यमों में कार्यरत लोगों और समाजों की स्त्रियाँ. इन सभी उद्यमों में लगी स्त्रियों की उत्पादनकर्ता, संगठनकर्ता, प्रबंधनकर्ता के रूप में स्पष्ट पहचान है. ये सभी स्त्रियाँ आज केवल अपने हित में नहीं बल्कि अपने समाज के शोषण के खिलाफ खड़ी नज़र आती हैं.

सामान्य स्त्रियों में निहित दार्शनिक, उत्पादक, संगठनात्मक और नेतृत्वकारी शक्तियों का ज्ञानगत आधार आधुनिक साइंस, पूँजी व राजनीति के गठबंधन को चुनौती दे सकता है.

दावा

लोकविद्या जन आन्दोलन की ओर से हाल ही में काठमांडू, नेपाल में हुए हुए विश्व सामाजिक मंच (15-19 फरवरी 2024) से सामान्य महिलाओं के ऐसे ज्ञान-आन्दोलन को गढ़ने का दावा पेश किया गया, जिसका आधार विचार नीचे दिया जा रहा है.

हर समाज की सामान्य महिलाओं में मनुष्य की बुनियादी संवेदनाओं का विशाल भण्डार होता है. इनके बल पर वे पालन-पोषण के नित नवीन तरीके इजाद करती हैं, जो मनुष्य के नैतिक, भौतिक और कलात्मक ज्ञान-पक्षों को गढ़ते हैं. संवेदनायें किसी भी तरह के ज्ञान का अंतर्निहित अंग हैं इसका ठोस सबूत स्त्री-ज्ञान में है.

संवेदनाओं से पूर्ण ज्ञान सभी के लिए बेहतर, न्याय और सम्मानपूर्ण दुनिया बनाने की बुनियाद है. यही इन्सान होने की पहचान है. सामान्य स्त्रियों का ज्ञान किसानी, कारीगरी, सेवा और छोटे उद्यमों की हर प्रक्रिया तथा प्रकारों में इन मूल्यों का संवर्धन करता है. यही वजह है कि संतों के दर्शन संवेदनाओं को ज्ञान का अभिन्न अंग मानते रहे हैं.

आवाहन

- आज की दुनिया में सबसे अधिक संख्या में सामान्य स्त्रियों के पास वस्त्र निर्माण और खाद्य निर्माण का ज्ञान है. साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ सामान्य स्त्रियों के ज्ञान-आन्दोलन का पहला चरण यहीं से शुरू होता है. **वस्त्र और खाद्य के क्षेत्र स्त्रियों की ज़िम्मेदारी में रहें. यह मांग उन्हें किसान और कारीगर समाजों के साथ बराबरी से खड़ा होने का ठोस आधार देती है.**
- **देश की कृषि नीति और उद्योग नीति बनाने में सामान्य स्त्रियाँ अपने ज्ञान का दावा पेश करें और देश के किसान-समाज और कारीगर-समाज के साथ खड़ीं हों.**
- **इन समाजों की प्रमुख मांग यह हों कि स्थानीय स्तर से वस्त्र और खाद्य निर्माण में लगे सभी स्त्री-पुरुषों की आय सरकारी कर्मचारी जैसी हो.**
- **प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र स्त्री-ज्ञान पर आधारित हों तभी समाज में नैतिक मूल्यों का बीजारोपण हो सकता है. ये सेवा क्षेत्र स्थानीय स्तर से स्त्रियों के पास हों.**
- **हम दुनिया के महिला संगठनों से अपील करते हैं कि वे अपने समाज और बृहत् समाज के लिए स्त्रियों की ज्ञान-आधारित प्रखर भूमिका को पहचानें और एक ऐसे स्त्री आन्दोलन को आकार दें जो एक दूसरी, नई, बेहतर और न्यायपूर्ण दुनिया बनाने की ओर बढ़े.**